

भारतीय शास्त्रीय संगीत के विकास में महिला संगीतकारों की ऐतिहासिक भूमिका

सोनवणे ऋतुराज राहुल¹ and डॉ. सौरभ सक्सेना²

¹शोधार्थी, ²शोध निर्देशक

संगीत-विभाग

सनराइज विश्वविद्यालय अलवर, राजस्थान

सारांश: भारतीय शास्त्रीय संगीत भारतीय सांस्कृतिक परंपरा की एक अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी अभिव्यक्ति है, जिसके विकास में महिला संगीतकारों, गायिकाओं, वादिकाओं, नर्तकियों तथा गुरु-परंपरा से जुड़ी महिला कलाकारों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। लंबे समय तक संगीत के इतिहास का लेखन मुख्यतः पुरुष कलाकारों, राजदरबारों और संस्थागत परंपराओं के आधार पर किया गया, जिसके परिणामस्वरूप अनेक महिला कलाकारों की रचनात्मक, शिक्षणात्मक और सांस्कृतिक भूमिका अपेक्षाकृत कम दिखाई दी।

आधुनिक संगीत-अध्ययन और जेंडर-आधारित संगीतशास्त्र ने इस दृष्टिकोण को चुनौती देते हुए महिला कलाकारों की सक्रिय भूमिका को सामने लाया है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के संदर्भ में यह भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के सामाजिक परिवर्तन, औपनिवेशिक आधुनिकता, राष्ट्रवादी पुनर्गठन, संगीत-संस्थाओं के विकास, ग्रामोफोन तथा रेडियो के प्रसार और सार्वजनिक संगीत-मंचों के विस्तार ने महिला कलाकारों के लिए नए अवसर पैदा किए। औपनिवेशिक काल में तवायफ और दरबारी कलाकारों की सामाजिक स्थिति को लेकर जो नैतिक विमर्श विकसित हुआ, उसने महिलाओं के संगीत-व्यवसाय को प्रभावित किया, किंतु इसी प्रक्रिया ने संगीत की नई सार्वजनिक संस्कृति को भी जन्म दिया।

मुख्य संकेतक : भारतीय शास्त्रीय संगीत, महिला संगीतकार, महिला गायिका, हिंदुस्तानी संगीत, कर्नाटक संगीत, तवायफ परंपरा, गुरु-शिष्य परंपरा, जेंडर, संगीत इतिहास।

I. प्रस्तावना

भारतीय शास्त्रीय संगीत का इतिहास अनेक सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मान्यताओं से निर्मित हुआ है। हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत की वर्तमान संरचना किसी एक काल या परंपरा का परिणाम नहीं है, बल्कि अनेक जातियों के प्रयोग, संरक्षण, पुनर्वास और संस्कृतियों के विकास का परिणाम है। इस विकास में महिलाओं की भूमिका को समझना इसलिए आवश्यक है क्योंकि संगीत का इतिहास केवल राग, ताल, घराना, बंदिश और वाद्य-तकनीक का इतिहास नहीं है, बल्कि यह उन कलाकारों के सामाजिक इतिहास का भी अध्ययन है जिन्होंने इन परंपराओं को जीवित रखा। आधुनिक शोध यह बताता है कि संगीत में महिलाओं की भागीदारी को लंबे समय तक सामाजिक और संस्कृतियों के पूर्वाग्रहों ने सीमित किया, जबकि महिला कलाकारों ने इन सीमाओं के भीतर और उनके विरुद्ध अपनी कलात्मक पहचान बनाई (हैमर, 2021)। भारतीय संदर्भ में महिला कलाकारों की स्थिति विशेष रूप से जटिल रही। दरबारी संस्कृति में प्रशिक्षित महिला कलाकार संगीत, नृत्य और काव्य की उच्च परंपराओं से जुड़ी थीं, बावजूद औपनिवेशिक नैतिकता और उन्नीसवीं शताब्दी के सामाजिक सुधार आंदोलनों ने उनके समुदायों को अक्सर नैतिक दृष्टि से संदिग्ध माना। इसके परिणामस्वरूप संगीत की सार्वजनिक प्रतिष्ठा और महिला कलाकारों की सामाजिक पहचान के बीच तनाव उत्पन्न हुआ।

इसके बावजूद, अनेक महिला कलाकारों ने अपने उच्च स्तरीय संगीत कौशल के माध्यम से शास्त्रीय संगीत की परंपरा को आगे बढ़ाया। औपनिवेशिक आधुनिकता के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय संगीत का विकास केवल 'शास्त्रीयकरण' की सीधी प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि उसमें रंगमंच, लोकप्रिय संगीत, औपनिवेशिक सांस्कृतिक संपर्क और सामाजिक सुधार आंदोलनों का भी योगदान था (निकोलसन, 2020)।

II. शोध-पद्धति

यह अध्ययन मुख्यतः ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं मात्रात्मक शोध-पद्धति पर आधारित है। इसमें द्वितीयक स्रोत का उपयोग किया गया है, जिनमें संगीतशास्त्रीय पुस्तकें, शोध-पत्र, अकादमिक जर्नल, ऐतिहासिक दस्तावेज, संगीत संबंधी अध्ययन तथा 2010-2021 के बीच प्रकाशित विद्वतापूर्ण साहित्य प्रमुख हैं। विशेष रूप से महिला संगीतकार, जेंडर और संगीत-पेशे से संबंधित आधुनिक शोध को आधार बनाया गया है। हैमर (2021) द्वारा संपादित द कैम्ब्रिज कम्पेनियन टू विमेन इन म्यूजिक सिंस 1900 महिलाओं की संगीत-क्षेत्र में पेशेवर भूमिका, प्रदर्शन, पहचान और पर्यावरणीय अवसरों को समझने के लिए महत्वपूर्ण स्रोत है।

इसके अतिरिक्त, रॉय (2019) ने औपनिवेशिक भारत में संगीत और सामाजिक आंदोलनों के परिवर्तन को समझने में पेशेवर संगीतकारों और पर्यावरणीय निकायों की भूमिका पर प्रकाश डाला है। निरंजना (2020) ने मुंबई में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की सामाजिक और शहरी संस्कृति का अध्ययन करते हुए संगीत को आधुनिक सामाजिक पहचान और सामूहिक सांस्कृतिक अनुभव से जोड़ा है।

III. भारतीय संगीत परंपरा में महिलाओं की प्रारंभिक भूमिका

भारतीय संगीत की परंपरा में महिलाओं की उपस्थिति आधुनिक काल की घटना नहीं है। भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में स्त्री-गायन, नृत्य, मंदिर संगीत, लोकसंगीत और दरबारी संगीत की अनेक परंपराएँ रही हैं। यद्यपि आधुनिक अर्थ में 'शास्त्रीय संगीतकार' की पेशेवर पहचान बाद की संस्थागत प्रक्रियाओं से विकसित हुई, लेकिन महिलाओं ने संगीत के संरक्षण और प्रसार में लंबे समय से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

दरबारी और मंदिर-आधारित संगीत परंपराओं में महिला कलाकारों ने गायन तथा प्रदर्शन की विशिष्ट शैलियों को विकसित किया। दक्षिण भारत में देवदासी और मंदिर-संबंधित संगीत-नृत्य परंपराएँ कर्नाटक संगीत और नृत्य-संस्कृति के ऐतिहासिक विकास से जुड़ी रही हैं। उत्तर भारत में तवायफों ने ठुमरी, दादरा, कजरी, गज़ल और अन्य अर्ध-शास्त्रीय शैलियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाद में इनमें से कई संगीत-रूप शास्त्रीय संगीत के सार्वजनिक कार्यक्रमों और रिकॉर्डिंग संस्कृति का हिस्सा बने।

IV. तवायफ परंपरा और शास्त्रीय संगीत

भारतीय संगीत के इतिहास में तवायफों की भूमिका को समझना महिला संगीतकारों के योगदान को समझने की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है। तवायफ केवल मनोरंजन करने वाली महिलाएँ नहीं थीं; उनमें से अनेक उच्च स्तर की संगीत, कविता, भाषा, नृत्य और प्रस्तुति-कला में प्रशिक्षित थीं। उन्होंने दरबारों, निजी महफिलों और सार्वजनिक सांस्कृतिक क्षेत्रों में संगीत की अनेक शैलियों को विकसित किया।

औपनिवेशिक काल में सामाजिक सुधार और नैतिकता संबंधी विमर्शों ने तवायफों की सामाजिक स्थिति को प्रभावित किया। इसके परिणामस्वरूप एक ओर उनकी पेशेवर प्रतिष्ठा कमजोर हुई, दूसरी ओर संगीत की 'सभ्य' और 'राष्ट्रीय' पहचान बनाने की कोशिशों में उनकी परंपराओं को पुनर्गठित किया गया। आधुनिक शोध इस प्रक्रिया को सरल 'पतन' की कहानी के रूप में नहीं देखता, बल्कि इसे संरक्षण, व्यवसाय, सामाजिक गतिशीलता और सांस्कृतिक पुनर्गठन की जटिल प्रक्रिया मानता है (रॉय, 2019)।

V. औपनिवेशिक आधुनिकता और महिला संगीतकार

औपनिवेशिक काल में भारतीय संगीत की सामाजिक संरचना में व्यापक परिवर्तन आया। राजदरबारों की आर्थिक शक्ति में परिवर्तन, नए शहरी केंद्रों का विकास, रंगमंच, ग्रामोफोन रिकॉर्ड और बाद में रेडियो जैसे माध्यमों ने संगीत के प्रसार की प्रकृति बदल दी। निकोलसन (2020) के अनुसार औपनिवेशिक दक्षिण एशिया में संगीत का विकास केवल परंपरा और राष्ट्रवाद के आधार पर नहीं समझा जा सकता; यूरोपीय रंगमंच और अन्य सांस्कृतिक संपर्कों ने भी भारतीय संगीत के आधुनिक रूपों को प्रभावित किया।

इस परिवर्तन में महिला कलाकारों के लिए नए अवसर उत्पन्न हुए। रिकॉर्डिंग तकनीक ने किसी कलाकार के प्रदर्शन को तत्कालीन भौगोलिक सीमाओं से बाहर पहुँचाने की संभावना पैदा की। इससे महिला कलाकारों को व्यापक श्रोता वर्ग प्राप्त हुआ। बाद में रेडियो प्रसारण ने संगीत को घर-घर पहुँचाया और महिला गायिकाओं की सार्वजनिक पहचान को मजबूत किया।

गौहर जान और रिकॉर्डिंग संस्कृति

गौहर जान भारतीय संगीत की प्रारंभिक रिकॉर्डिंग संस्कृति से जुड़ी सबसे महत्वपूर्ण महिला कलाकारों में से एक थीं। उनका महत्व केवल एक प्रसिद्ध गायिका के रूप में नहीं, बल्कि रिकॉर्डिंग तकनीक और पेशेवर संगीत के संक्रमणकालीन दौर की प्रतिनिधि के रूप में समझा जा सकता है।

गौहर जान जैसी कलाकारों ने संगीत को जीवंत महफिल से तकनीकी माध्यम—ग्रामोफोन रिकॉर्ड तक पहुँचाने की प्रक्रिया में योगदान दिया। इससे गायन की प्रस्तुति, समय-सीमा, रचना-चयन और कलाकार की सार्वजनिक पहचान में परिवर्तन आया। इस प्रकार महिला कलाकार आधुनिक संगीत उद्योग की प्रारंभिक संरचना का हिस्सा बनीं।

हिराबाई बड़ोदकर और सार्वजनिक मंच

हिराबाई बड़ोदकर ने महिला शास्त्रीय गायिकाओं के लिए सार्वजनिक मंच पर सम्मानजनक पेशेवर पहचान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में महिला कलाकारों के लिए सार्वजनिक रूप से संगीत प्रस्तुत करना सामाजिक दृष्टि से चुनौतीपूर्ण था। ऐसे वातावरण में हिराबाई जैसी कलाकारों ने मंचीय संगीत को महिला कलाकारों के लिए अधिक स्वीकार्य बनाया।

उनकी प्रस्तुति शैली, संगीत-शिक्षा और सार्वजनिक कार्यक्रमों में भागीदारी ने महिला कलाकार की उस छवि को मजबूत किया जिसमें कलाकार को केवल मनोरंजनकर्ता नहीं बल्कि गंभीर संगीत साधक के रूप में देखा जाने लगा।

केसरबाई केरकर और शास्त्रीय गायन की उत्कृष्टता

केसरबाई केरकर ने जयपुर-अतरौली परंपरा के कठिन राग-विन्यास और जटिल गायकी को उच्च स्तर की कलात्मकता के साथ प्रस्तुत किया। उनकी संगीत-साधना यह दर्शाती है कि महिला कलाकार केवल लोकप्रियता प्राप्त करने वाली गायिकाएँ नहीं थीं, बल्कि वे जटिल शास्त्रीय परंपराओं की गंभीर साधक और संरक्षक भी थीं।

उनकी गायकी में राग की संरचना, स्वर-शुद्धता, लयकारी और बंदिशों की विशिष्ट व्याख्या दिखाई देती है। इस प्रकार महिला कलाकारों ने घराना-परंपराओं के संरक्षण और विकास में भी सक्रिय भूमिका निभाई।

बेगम अख्तर और अर्ध-शास्त्रीय संगीत

बेगम अख्तर ने ग़ज़ल, ठुमरी और दादरा जैसी शैलियों को अत्यंत उच्च कलात्मक स्तर पर प्रतिष्ठित किया। उनका योगदान इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि उन्होंने शास्त्रीय और अर्ध-शास्त्रीय संगीत के बीच सांस्कृतिक संबंध को मजबूत किया।

उनकी गायकी में रागात्मकता, भावाभिव्यक्ति और शब्द-संवेदना का अद्भुत संयोजन दिखाई देता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय संगीत का विकास केवल शुद्ध शास्त्रीय शैली के भीतर नहीं हुआ, बल्कि ठुमरी, दादरा, ग़ज़ल और अन्य शैलियों के साथ निरंतर संवाद से भी हुआ।

मोगुबाई कुर्डीकर और गुरु-शिष्य परंपरा

मोगुबाई कुर्डीकर ने जयपुर-अतरौली गायकी को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका महत्व केवल एक कलाकार के रूप में नहीं बल्कि गुरु के रूप में भी है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में गुरु-शिष्य परंपरा संगीत की मौखिक एवं व्यावहारिक ज्ञान-व्यवस्था का प्रमुख माध्यम रही है।

महिला गुरु के रूप में उनकी भूमिका यह दर्शाती है कि महिलाएँ केवल ज्ञान की प्राप्तकर्ता नहीं थीं, बल्कि वे ज्ञान की संरक्षक और अगली पीढ़ी की प्रशिक्षक भी थीं। इस प्रकार महिला कलाकारों की ऐतिहासिक भूमिका

को केवल मंचीय उपलब्धियों के आधार पर नहीं बल्कि उनके शिक्षण और परंपरा-संरक्षण के आधार पर भी देखा जाना चाहिए।

गंगूबाई हंगल और महिला कलाकार की स्वतंत्र पहचान

गंगूबाई हंगल ने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में एक विशिष्ट पहचान बनाई। उनकी गायकी किराना परंपरा से संबंधित थी और उन्होंने अपनी विशिष्ट आवाज तथा गंभीर प्रस्तुति के माध्यम से शास्त्रीय गायन में अलग स्थान प्राप्त किया।

उनका जीवन यह भी दिखाता है कि महिला कलाकारों को केवल लैंगिक बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ा, बल्कि वर्ग, जाति, सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक परिस्थितियों जैसी अनेक संरचनात्मक बाधाएँ भी उनके संगीत-जीवन को प्रभावित करती थीं। इसलिए महिला संगीतकारों का इतिहास सामाजिक इतिहास से अलग करके नहीं देखा जा सकता।

एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी और कर्नाटक संगीत

कर्नाटक संगीत के क्षेत्र में एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कर्नाटक संगीत को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक पहचान दिलाने में योगदान किया। उनकी गायकी में राग, भक्ति, भाषा और भावाभिव्यक्ति का संतुलित समन्वय दिखाई देता है।

उनकी सफलता ने महिला कलाकारों के लिए सार्वजनिक मंचों, राष्ट्रीय संस्थानों और अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक क्षेत्रों में नई संभावनाएँ खोलीं। इससे यह धारणा मजबूत हुई कि महिला कलाकार भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रतिनिधि सांस्कृतिक दूत भी हो सकती हैं।

महिला वाद्य-संगीतकारों की भूमिका

महिला कलाकारों का योगदान केवल गायन तक सीमित नहीं रहा। सितार, सरोद, वायलिन, वीणा, संतूर, तबला और अन्य वाद्यों के क्षेत्र में भी महिलाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। ऐतिहासिक रूप से कुछ वाद्यों को पुरुषों के लिए अधिक उपयुक्त माना जाता था। इस प्रकार की लैंगिक धारणाओं ने महिलाओं की वाद्य-संगीत में भागीदारी को सीमित किया।

महिला संगीतकारों की बढ़ती भागीदारी ने इन धारणाओं को चुनौती दी। व्यापक संगीत-अध्ययन से पता चलता है कि आधुनिक काल में महिला वादक और गायिकाएँ पेशेवर संगीत संस्थानों, मंचों और अंतरराष्ट्रीय संगीत-संस्कृति में अधिक दिखाई देने लगीं।

रेडियो और महिला संगीतकार

आकाशवाणी और रेडियो प्रसारण ने भारतीय शास्त्रीय संगीत की सामाजिक पहुँच को अत्यधिक विस्तृत किया। रेडियो ने महिला कलाकारों को ऐसे श्रोताओं तक पहुँचने का अवसर दिया जो प्रत्यक्ष संगीत समारोहों में उपस्थित नहीं हो सकते थे।

रेडियो के माध्यम से महिला कलाकारों की आवाज़ घरेलू क्षेत्र तक पहुँची। इससे महिलाओं के संगीत को सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में नई दृश्यता मिली। संगीत की यह प्रसारण संस्कृति आधुनिक भारत में सामूहिक श्रवण संस्कृति के निर्माण में भी सहायक बनी। निरंजना (2020) ने मुंबई की संगीत संस्कृति के संदर्भ में यह दिखाया है कि संगीत-श्रवण आधुनिक शहरी सामाजिकता और सांस्कृतिक पहचान के निर्माण का महत्वपूर्ण माध्यम बना।

संगीत शिक्षा और महिला कलाकार

महिला संगीतकारों के योगदान का एक महत्वपूर्ण पक्ष संगीत-शिक्षा है। बीसवीं शताब्दी में संगीत विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और संस्थागत प्रशिक्षण के विस्तार से महिलाओं के लिए संगीत सीखने और पेशेवर बनने की संभावनाएँ बढ़ीं।

पहले संगीत-ज्ञान का बड़ा हिस्सा परिवार, दरबार या गुरु-शिष्य परंपरा में सीमित रहता था। आधुनिक संस्थागत शिक्षा ने संगीत को अधिक व्यापक सामाजिक समूहों के लिए उपलब्ध कराया। इससे महिलाओं को औपचारिक रूप से संगीत शिक्षा प्राप्त करने और शिक्षक के रूप में कार्य करने का अवसर मिला।

महिला कलाकार और संगीत का संस्थागत विकास

भारतीय शास्त्रीय संगीत के आधुनिक विकास में संगीत सम्मेलनों, विश्वविद्यालयों, सांस्कृतिक संस्थाओं, रेडियो और रिकॉर्डिंग कंपनियों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। इन संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने से संगीत के पेशेवर क्षेत्र का स्वरूप बदला।

समकालीन महिला-संगीत अध्ययन यह संकेत देता है कि महिलाओं की पेशेवर भागीदारी केवल कलाकार के रूप में नहीं बल्कि शिक्षक, संगीतशास्त्री, प्रशासक और सांस्कृतिक कार्यकर्ता के रूप में भी महत्वपूर्ण है। Hamer (2021) का अध्ययन महिलाओं के संगीत-क्षेत्र में प्रदर्शन, शिक्षा, पेशेवर पहचान और संस्थागत अवसरों को व्यापक संदर्भ में देखता है।

महिला संगीतकारों के सामने सामाजिक बाधाएँ

महिला संगीतकारों के विकास में अनेक सामाजिक बाधाएँ रही हैं। इनमें प्रमुख हैं—

बाधा	महिला संगीतकारों पर प्रभाव
पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना	पेशेवर संगीत में सीमित अवसर
नैतिक पूर्वाग्रह	महिला कलाकारों की सामाजिक प्रतिष्ठा प्रभावित
आर्थिक निर्भरता	स्वतंत्र संगीत-करियर में कठिनाई
शिक्षा की सीमित उपलब्धता	औपचारिक प्रशिक्षण में बाधा
मंचीय अवसरों की कमी	सार्वजनिक पहचान सीमित
परिवार एवं पेशे का संतुलन	लंबे संगीत-करियर में चुनौती
पुरुष-प्रधान संस्थाएँ	निर्णय लेने में सीमित प्रतिनिधित्व
मीडिया की लैंगिक दृष्टि	कलाकार की कला के बजाय व्यक्तित्व पर अधिक ध्यान

महिला कलाकारों की पेशेवर पहचान पर लैंगिक दृष्टिकोण का प्रभाव केवल भारत तक सीमित नहीं था। व्यापक संगीत-अध्ययन में भी यह पाया गया है कि महिला कलाकारों को अवसर मिलने के बावजूद उनके प्रदर्शन और व्यक्तित्व को लैंगिक अपेक्षाओं के आधार पर देखा जा सकता है।

VI. महिला संगीतकारों का योगदान: एक विश्लेषण

योगदान का क्षेत्र	महिला संगीतकारों की भूमिका	ऐतिहासिक प्रभाव
गायन	ध्रुपद, खयाल, ठुमरी, दादरा, गज़ल आदि	गायन परंपराओं का संरक्षण
घराना	विभिन्न घरानों की शैलियों का अभ्यास	परंपराओं की निरंतरता

शिक्षण	गुरु और संगीत शिक्षिका के रूप में भूमिका	नई पीढ़ी का निर्माण
रिकॉर्डिंग	ग्रामोफोन और अन्य माध्यम	संगीत का व्यापक प्रसार
रेडियो	आकाशवाणी एवं प्रसारण	श्रोताओं का विस्तार
मंच	सार्वजनिक संगीत समारोह	महिला कलाकार की स्वीकृति
कर्नाटक संगीत	गायन एवं वाद्य परंपराएँ	दक्षिण भारतीय संगीत का प्रसार
अर्ध-शास्त्रीय संगीत	ठुमरी, दादरा, गज़ल आदि	संगीत की लोकप्रियता
सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व	राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शन	भारतीय संगीत की वैश्विक पहचान

2010-2021 के अध्ययन में महिला संगीतकारों का पुनर्मूल्यांकन

2010-2021 के बीच संगीत-अध्ययन में जेंडर, प्रोफेशनल पहचान और महिलाओं की भूमिका पर विशेष ध्यान दिया गया। इस अवधि का शोध यह बताता है कि महिलाओं के संगीत योगदान को केवल 'महिला संगीतकारों' की अलग श्रेणी में रखने के बजाय संगीत के सामान्य इतिहास के भीतर शामिल करना आवश्यक है।

हैमर (2021) के संपादित ग्रंथ में महिलाओं की रचना, प्रदर्शन, संचालन, संगीत-प्रौद्योगिकी और व्यापक संगीत-पेशों में भागीदारी पर चर्चा की गई है। यह दृष्टिकोण भारतीय संदर्भ में भी उपयोगी है क्योंकि इससे यह प्रश्न उठता है कि संगीत इतिहास किन कलाकारों को केंद्र में रखता है और किन्हें हाशिए पर छोड़ देता है।

निरंजना (2020) का मुंबई-संगठन अध्ययन भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वह हिंदुस्तानी संगीत को केवल संगीतशास्त्रीय प्रणाली नहीं बल्कि शहरी सामाजिक अनुभव और आधुनिकता के निर्माण से जोड़ता है।

VII. निष्कर्ष

भारतीय शास्त्रीय संगीत के विकास में महिला संगीतकारों की ऐतिहासिक भूमिका अत्यंत व्यापक और निर्णायक रही है। उन्होंने संगीत की परंपराओं को केवल संरक्षित नहीं किया, बल्कि बदलती सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप उन्हें पुनर्गठित भी किया। तवायफ और दरबारी कलाकारों से लेकर ग्रामोफोन युग की गायिकाओं, रेडियो कलाकारों, मंचीय गायिकाओं, गुरु-शिक्षिकाओं और आधुनिक संस्थागत संगीतकारों तक महिलाओं की भूमिका भारतीय संगीत के विकास की निरंतर प्रक्रिया का हिस्सा रही है।

औपनिवेशिक आधुनिकता ने महिला कलाकारों के सामने अनेक सामाजिक और नैतिक बाधाएँ उत्पन्न कीं, लेकिन इसी परिवर्तनशील वातावरण ने रिकॉर्डिंग, रेडियो, सार्वजनिक संगीत समारोहों और संगीत संस्थानों

जैसे नए अवसर भी प्रदान किए। Roy (2019) तथा Nicholson (2020) के अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय संगीत का आधुनिक विकास सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तन से गहराई से जुड़ा था।

गौहर जान, हिराबाई बड़ोदकर, केसरबाई केरकर, मोगुबाई कुर्डीकर, बेगम अख्तर, गंगूबाई हंगल और एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी जैसी कलाकारों ने अलग-अलग संगीत परंपराओं को व्यापक पहचान दिलाई। उनके योगदान ने यह सिद्ध किया कि महिला कलाकार भारतीय शास्त्रीय संगीत की केवल सहभागी नहीं बल्कि उसकी सक्रिय निर्माता और सांस्कृतिक वाहक हैं।

अतः भारतीय शास्त्रीय संगीत के इतिहास को अधिक समग्र रूप से समझने के लिए महिला संगीतकारों के योगदान को मुख्यधारा के संगीत इतिहास में उचित स्थान देना आवश्यक है। 2010–2021 के आधुनिक संगीत-अध्ययन ने इस दिशा में महत्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रदान किया है, स्वेच्छिक लिंग, पेशेवर पहचान, प्रदर्शन और पर्यावरणीय अवसरों के अध्ययन के माध्यम से (हैमर, 2021; प्लाकानिका, 2021)।

संदर्भ

1. कार्वे, एस. के. (2014). उत्तर भारत की ठुमरी और महिला संगीतकार: बीसवीं सदी की शुरुआत के दृष्टिकोण। अतोद्य: रबींद्र भारती विश्वविद्यालय के इंस्ट्रूमेंटल म्यूज़िक विभाग का जर्नल, 1(1), 1–8.
2. काशालकर-कार्वे, एस. (2014). 20वीं सदी की शुरुआत में उत्तर भारत की ठुमरी और महिला संगीतकार। अतोद्य: रबींद्र भारती विश्वविद्यालय के इंस्ट्रूमेंटल म्यूज़िक विभाग का जर्नल, 1(1), 1–8.
3. कुरैशी, आर. बी. (2014). उत्तर भारत में संगीत, लिंग और प्रस्तुति की राजनीति। एथनोम्यूज़िकोलॉजी फ़ोरम, 23(2), 179–196.
4. डी बोइस, एस. (2010). समकालीन उत्तर भारत में पेशेवर ध्रुपद प्रस्तुति से महिला संगीतकारों को बाहर रखना। ईयरबुक फ़ॉर ट्रेडिशनल म्यूज़िक, 42, 1–17.
5. निकोलसन, आर. डी. (2020). “क्या कोई क्रिस्टी मिनस्ट्रैल, हार्लेकिन या प्राचीन फ़ारसी कलाकार?": ओपेरा, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और दक्षिण एशिया के लोकप्रिय “म्यूज़िकल” की शुरुआत। थिएटर सर्वे, 61(3), 1–20.
6. निरंजना, टी. (2012). भारत में संगीत, आधुनिकता और महिला कलाकार का निर्माण। साउथ एशियन पॉपुलर कल्चर, 10(2), 145–158.

7. निरंजना, टी. (2020). मुंबई में म्यूज़िकोफिलिया: परफॉर्म करने वाले कलाकार और महानगर का अवचेतन मन। ऊकूक यूनिवर्सिटी प्रेस, 1–240.
8. प्लाकानिका, एफ. (2021). सोलो कलाकार और दिवा (प्रसिद्ध महिला गायिका): बदलते अवसर, पहचान और लोगों की प्रतिक्रिया। एल. हैमर (संपादक), 1900 के बाद संगीत में महिलाओं पर कैम्ब्रिज कम्पेनियन, 80–94.
9. बेकर, जी. ई. एच. (2011). अनहर्ड मेलोडीज़: भारत की महिला संगीतकार। जर्नल ऑफ़ इंटरनेशनल विमेंस स्टडीज़, 12(5), 1–15.
10. मोरकॉम, ए. (2013). परफॉर्मिंग द नेशन: दक्षिण एशिया में महिलाएं, संगीत और सांस्कृतिक पहचान। पॉपुलर कम्युनिकेशन, 11(2), 123–137.
11. रॉय, टी. (2019). औपनिवेशिक भारत के अंतिम दौर में संगीत और समाज: गया में एसराज का अध्ययन। द जर्नल ऑफ़ एशियन स्टडीज़, 78(4), 1–18.
12. वेडमैन, ए. जे. (2011). जेंडर्ड साउंडस्केप्स: दक्षिण भारत में महिलाएं, संगीत और सार्वजनिक स्थान। एथनोम्यूज़िकोलॉजी, 55(3), 1–20.
13. हैमर, एल. (2021). 1900 के बाद से महिलाएं, परफॉर्मेंस, पहचान और पेशेवर संगीत-निर्माण। एल. हैमर (संपादक), 1900 के बाद संगीत में महिलाओं पर कैम्ब्रिज कम्पेनियन, 1–20.